INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

D.P. Bhosale College, Koregaon

Tal. Koregaon, Dist. Satara (MS), INDIA
(Affiliated to Shivaji University, Kolhapur)
NAAC Re-accredited 'A' Grade (CGPA 3.12)
ISO 9001:2015 Certified

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

March -2019 Special Issue – 171 (D)

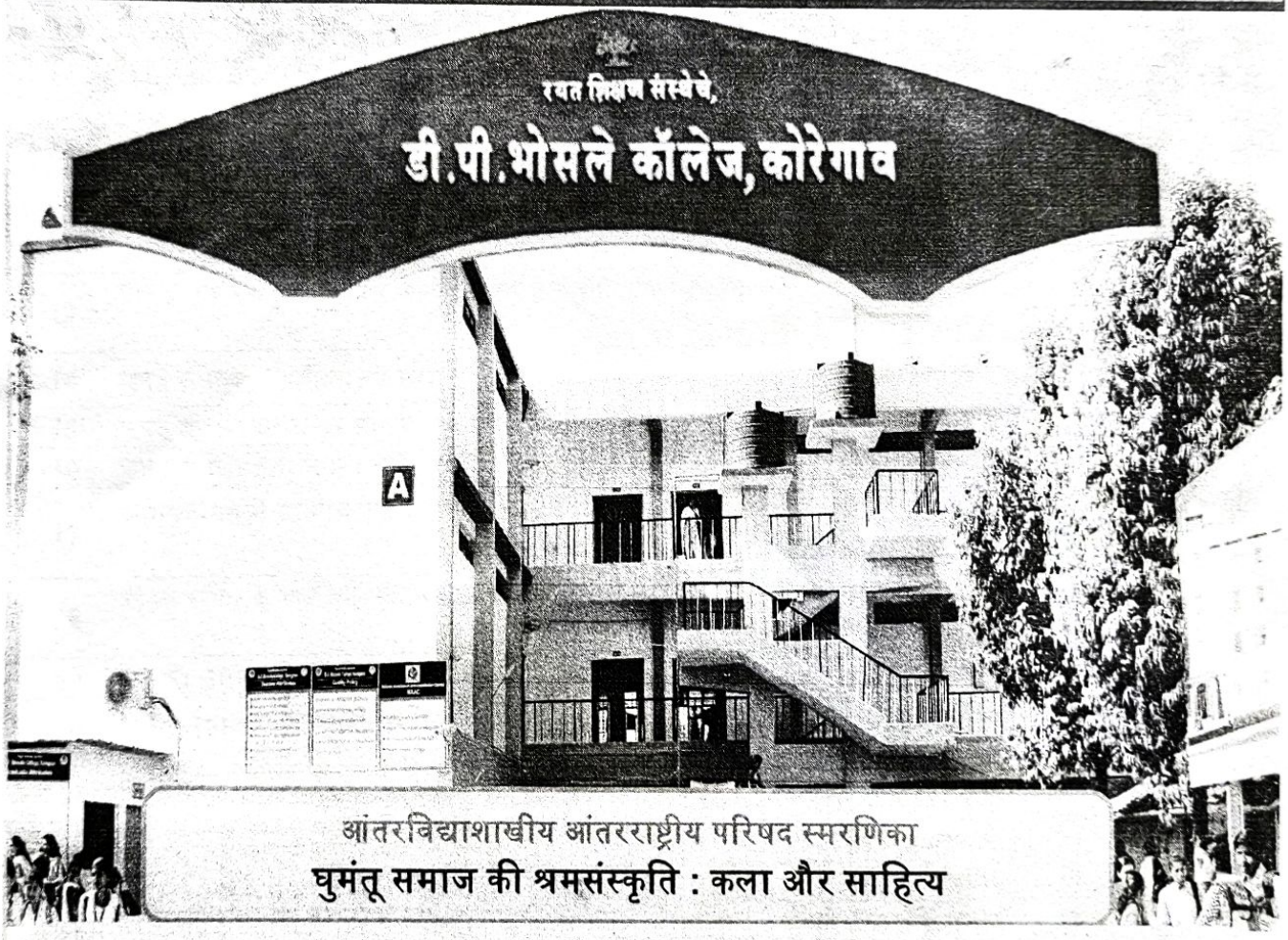

आंतरविद्याशाखीय आंतरराष्ट्रीय परिषद स्मरणिका

घुमंतू समाज की श्रमसंस्कृति : कला और साहित्य

अतिथी संपादक
डॉ. विजयसिंह सावंत
प्राचार्य
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता.कोरेगाव, जि. सातारा

कार्यकारी संपादक
डॉ. गजानन भोसले
प्रमुख, हिंदी विभाग
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता. कोरेगाव, जि. सातारा

सहयोगी संपादक
श्रीमती आर. के. मुल्ला
सहाय्यक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता. कोरेगाव, जि. सातारा

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज धनगर (येवला)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 171(D) घुमंतू समाज की श्रमसंस्कृति : कला और साहित्य
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
April-2019

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक / लेखिका	पृष्ठ क्र.
1	घुमंतू घिसाडी समाज का स्वरूप एवं वास्तव	डॉ.भानुदास आगेडकर	06
2	बंजारा समाज की संस्कृति एवं व्यवसाय का परिचय	डॉ. मेदिनी अंजनीकर	12
3	घुमंतू समाज की बोली भाषा	डॉ. बी.एस. बलवंत	15
4	वंचित आबेडकरवादी साहित्य अब वैश्विक परिदृश्य में	डॉ.गोरख बनसोडे	18
5	'छोरा कोल्हाटी का' में स्त्री शोषण कि भयानकता	महेश भोपळे	21
6	घुमंतू समाज का परिचय तथा महाराष्ट्र के घुमंतू समाज के साहित्य का स्वरूप	डॉ.जी.एस.भोसले	24
7	पारधी समाज : जात पंचायत	प्रा.एम.व्ही.वर्णेकर	27
8	घुमंतू धनगर जनजाति के अंतरंग	डॉ. संगिता चित्रकोटी	30
9	बिना चेहरे के लोग में चित्रित घुमंतू जन-जातियो की कथा-व्यथा	डॉ. नितीन धवडे	33
10	घुमंतू जन – जातियों का चित्रण सुषमा मुनींद्र की कहानी 'देवता' के संदर्भ में	कु.अलका घोडके	36
11	आदिवासी पीड़ा की सशक्त अभिव्यक्ति : निर्मला पुतुल की कविताएँ	डॉ.कामायनी सुर्वे	39
12	वंचीतो के साहित्य में चित्रित वेदना	सचिन जाधव	44
13	वंचित एवं घुमंतू आदिवासी जनजाति का साहित्य : एक विवेचन	श्री. सूर्यकांत आमलापुरे	47
14	घुमंतू समाज के साहित्य का स्वरूप	डॉ कविता पनिया	51
15	घुमंतू बंजारा जाति का स्वरूप एवं उनकी पहचान	प्रा. नीलम भोसले	53
16	घुमंतू जनजातियाँ अपनी नयी रोशनी की तलाश में	डॉ.सिंदू हालदे	58
17	जातपंचायत में गावपंचायत – घुमक्कड समाज की त्रासदी	डॉ. एच.डी.टोंगारे, सतीशकुमार पडोळकर	60
18	रांगेय राघव के 'कब तक पुकारू' उपन्यास में करनट जाति के शोषण का चित्रण	प्रा.जे.ए. पाटील	63
19	बंजारा समाज की बोली भाषा का स्वरूप	डॉ. अनिता काकडे	68
20	घुमंतू समाज में कोल्हाटी समाज	डॉ. दिलीपकुमार कसबे	72
21	रामनाथ चव्हाण के 'बिन चेहरे के इन्सान' कहानी संग्रह में चित्रित घुमंतू समाज की समस्याएँ	डॉ. एच.व्ही. काटे	76
22	बंजारा एवं पारधी : परिवर्तन के संकेत	डॉ.भारत खिलारे	81
23	भारतीय समाज का सबसे वंचित समाज : किसान	प्रा.मारुफ मुजावर	87
24	घुमंतू चित्रकथी समाज का सांस्कृतिक जीवन	श्रीमती. आर. के मुल्ला	90
25	हिंदी कहानी साहित्य में वंचित समाज का चित्रण	प्रा.पी. आर.रगडे	94
26	बंजारा समाज की गुप्त भाषागत शब्दावली : एक अध्ययन	डॉ.सुभाष राठोड	99
27	घुमंतू समाज की बोली भाषा	डॉ.संग्राम शिंदे	103
28	वंचित अवाम की बुलंद आवाज : जयभारत –जयभीम	डॉ.सय्यद शौकतअली	107
29	घुमंतू समाज की कलाओं के प्रकार और स्वरूप	श्री.अंकुश शेलार	110
30	घुमंतू समाज का व्यवसायानुसार वर्गीकरण	डॉ.बाजीराव शेलार	114
31	घुमंतू समाज का स्वरूप और उनके व्यवसाय	डॉ. महिपती शिवदास	118

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 171(D) घुमंतू समाज की श्रमसंस्कृति : कला और साहित्य
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
April-2019

घुमंतू धनगर जनजाति के अंतरंग

डॉ.संगिता सूर्यकांत चित्रकोटी
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
लक्ष्मी–शालिनी महिला महाविद्यालय पेझारी–रायगड

जीवनयापन के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर घुमनेवाले समुदायों को घुमंतू कहा जाता है। गडरिया घुमंतू जनजाति है । इन्हें महाराष्ट्र में धनगर कहा जाता है। इस जनजाति का मुख्य व्यवसाय पशु पालन है। ये मुख्य रुप से भेड बकरियॉ पालते है। अत: ये चरागाहो की तलाश में एक से दूसरे स्थान पर जाते है। जब एक स्थान पर चारा और पानी समाप्त हो जाता तो वे किसी अन्य चरागाह पर चले जाते है। इसके साथ ये ऋतु के साथ भी स्थलांतर करते हैं। भेड–बकरी एवं उनकी ऊन से कंबल बनाकर बेचने का व्यवसाय भी धनगरों व्दारा किया जाता है। जडी बुटियों से इलाज की परंपरा हमारे देश में अत्यंत पुरानी है। इस जनजाति में जडीबुटियों का ज्ञान परंपरागत पीढियों से चलता आ रहा है। इनका अधिकांश जीवन गिरी कंदराओं में बितता है। प्रकृति की गोद में और प्रकृति व्दारा लालित पालित यह जनजाति प्रकृति पूजक है। प्रकृति में पाए जानेवाले सभी जीव जंतु पहाड नदियॉ नाले खेत इन सभी जीवित वस्तुओं की पूजा करते है वे मानते है कि श्ंसस सपअपदह जीपदहे ैंअम ``वनसश अर्थात प्रकृति के प्रत्येक वस्तु में जीवन होता है। मानवीय गुणों से भरेपुरे इन लोगों की त्रासदि वेदनामयी है। आसमान जिनका छत है और धरती जिनका बिछोना पर कानून भी इन्हें हाशिये पर धकेलते गए। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर विमक्त घुमंतू और अर्धघुमंतू के साथ आज भी सम्मानजनक व्यवहार नहीं है। इनके जीवन की यातनाओं का कोई अंत नहीं है। इनके जीवन से जुडे सारे सवाल जैसे के वैसे है। सामाजिक न्याय से वंचित, सामाजिक विकास की धारा से कोसों दूर, जीवन की कठोरता के मध्य भी मस्ती एवं उमंग भरा जीवन जीते है। धनगरोंकी सांस्कृतिक परंपराए उनके जीवन संघर्ष से संपृक्त है। प्रकृति के खूले वातावरण में जंगलो और पर्वतों के बीच अपनी आदिम परंपराओं, रितीरिवाजों, तीजत्योहारों आदि के साथ जीवन–यापन करते है। इनकेपर्वऔर त्योहार सामुदायिक जीवन के उल्लास के अभिव्यंजक होते है।

महाराष्ट्र में धनगरी गज नृत्य अत्यंत लोकप्रिय है।

धनगरी गजनृत्य :–

भारतीय अभिजात कलाओं में नृत्यकला को महान परंपरा प्राप्त है। हर क्षेत्र की संस्कृति, परंपरा, लोककला, सामाजिकता के संयोग से शास्त्रीय नृत्य परंपरा के अनेकविध प्रवाह निर्माण हो गए। देवी–देवताओं के पुराण कथाओं के साथ स्त्री–पुरुषों के कलात्मक सृजनशीलता का प्रकटीकरण नृत्य में होता है। नृत्य आनंद की नैसर्गिक अभिव्यक्ति है। दिनभर के श्रम के बाद श्याम को एकत्र आकर गीत–गायन और नृत्य से श्रमपरिहार और मनोरंजन हेतु ही लोकनृत्य का जन्म हुआ। हरभरे चरागाहों में अपने पशुओं के झुण्ड को लेकर घमन्तु जीवन जीनेवाले ये लोग अपने आराध्य देवता बिरुआ के जन्म की गाथा गाते हुए नृत्य करते है। वर्षभर पशुचारन के बाद एक दिन धनगर लोक अपने आराध्य देव बिरुआ (बिरोबा) के सम्मान में आयोजित मेले में एकत्र होते है। बिरोबा के आशीष प्राप्ति के लिए नृत्य किया जाता है। बिरोबा के साथ ज्योतिबा धुलोबा, मायाक्का खंडोबा, भैरोबा भोजलिंग, आदि धनगरों के देवता है। अपने इन ग्रामदेवताओं की उपासना विधी, कुलप्रथा, मन्नत पूर्ण करना आदि कारणों से गजीढोल नृत्य किया जाता है। ग्रामदेवता गॉवपर आशीष बरसे, प्रसन्न रहे, अच्छी बारिश हो, अच्छा अनाज निकले, अपने गॉव पर कोई संकट न आए इसलिए भी नृत्य का प्रयोजन होता है।

महाराष्ट्र के साथ आंध्रप्रदेश, कर्नाटक में भी धनगर जनजाति गजढोल नृत्य करतें है। वहॉ इसे श्थपेटू गुल्लूश कहा जाता है।

नर्तकों की वेशभूषा विशेष और आकर्षक होती है। वे नर्तक धोती अंगारखा फेटा और हाथों में रंगीन रुमाल लिए ढोल वादक के चतुर्दिक खडे होकर नृत्य करते है, वर्तुळाकार घेरे में नृत्यरत नर्तकों के नृत्य की तीव्रता और प्रसन्नता सहज सौंदर्य का बोध कराती है। नृत्य करनेवाले को श्गजीश कहते है। ढोल बजानेवाले को श्ढोल्याश कहते है। इसलिए इस नृत्य को श्गजीढोलश/गजढोल नाम पडा। इस नृत्य को लगभग २०० साल की परंपरा है। और २५–५० लोगोंव्दारा गजीनृत्य किया जाता है।ढोल के साथ डफ, झांजी, सनई इन वाद्यों का प्रयोग भी नृत्य के लिए होता है। लगभग ५ घंटे यह नृत्य चलता है। इसमें अनेक नृत्यप्रकार है परंतु फिलहाल ९–१० उपलब्ध है।इन प्रकारों को श्धायश कहा जाता है। धनगरी धाय, घोड धाय, गला मिठी धाय, टिपरी धाय, कोंडिबाची धाय, धोड धाय, रिंगन धाय आदि। एक धाय १२ से १५ मिनट तक चलती है। कुल मिलाकर नृत्य ३ घंटे चलता है।

गजीढोल में नृत्य और संगीत का समन्वय है। परंतु फिर भी उसकी लिखित संहिता नहीं है। यहाँ नृत्यकला एक पीढी से दूसरी पिढी की ओर परंपरा से चली आयी है। लोगों का मनोरंजन यह प्रमुख उद्देश्य होता है गजीनृत्य का। बिरोबाच्या नावाने चांगभल, यळकोट यळकोट जय मल्हार का मुक्त जयघोष नृत्य के दौरान किया जाता है। जिससे जोशपूर्ण वातावरण निर्मिति होती है। गजीढोल लय, ताल, गती, नृत्य के कारण अत्यंत मनोहारी बन जाता है।

धनगरी ओव्या:–

धनगरी अस्मिता का प्रतीक धनगरी ओवी है। प्रमुखतया खंडोबा (जेजुरी),धुळोबा (विडणी), बिरोबा (आरेवाडी), मायाक्का (चिंचणी), भिवाई (कांबळेश्वर), शिंग्रूबा (खंडाळा) आदि देवी देवताओं की आराधना, स्मरण, स्तुति, भक्ति, हेतु ओवी गायी जाती है। ओवी के प्रारंभ में सूरज, चॉद, पृथ्वी, नदी, मेघों आदियों को नमन किया जाता है।ढोल व झांजी के ताल पर ओवी गायी जाती है। कभी कभी बासुरी के स्वर की साथ ओवी अनुठी सिध्द होती है। ज्ञानेश्वरी ओवी या पत्थर की चक्कीपर पिसते समय गायी जाने वाली ओवीयोंसे धनगरी ओवी भिन्न और अपनी अलग विशेषता धारण किए हुई है।

धनगरी ओवी को दो भागों में विभाजित किया जाता है –

पहले हिस्से में गीत पद्यरुपमें प्रस्तुत होता है। अर्थात गीत गाकर प्रस्तुत होता है। दूसरे हिस्से में कथा गद्य रुप में प्रस्तुत होती है। अर्थात कथा कहानी के रुप में प्रस्तुत होती है। गीत गानेवाले लोग और कथा बताने वाले लोगअलग–अलग होते है। गीतों में गाया जाने वाला आशय ही फिरसे कथारुप में प्रस्तुत होता है। गीतों की शैलीऔर कथा बताने की शैली भिन्न भिन्न होती है। इन दोनों शैलियोंको धनगर जनजातिने पीढि दर पीढि सुरक्षित रखा है। इसमें आवाज बदलकर गीत व कथा सुनाई जाती है वही धनगरी ओवी की विशेषता है। इनकी ओवी (कविता) मुख्य रुपसे आसपास सदाबहार पेड प्रकृति से प्रेरित है। ओवी की मूल भावना ईश्वर आराधना ही होती है। धनगरी ओवी के लिए श्बाणाश्शब्द भी प्रचलित है। तीज त्योहारों पर धनगरी बाणा का प्रस्तुतीकरण होता है। बिरोबा की जन्मकथा, बिरोबा की मॉ गंगा, सुरावंती का जन्म, खंडोबा का जन्म, खंडोबा–बाणाई विवाह आदि कथाएँ श्ओवीश या श्बाणाश के व्दारा प्रस्तुत होती है। सामाजिक आर्थिक दृष्टि से पिछडी जनजाति ना घर, ना व्दार, ना शिक्षा जैसी शोचनीय स्थिति में जीवन व्यतित करनेवाली असंघटित जनजाति होते हुए भी अपनी संस्कृति, परंपरा, कलाओं को मौखिक रुप में दूसरी पीढ़ी के सुरक्षित हाथों में सौंप देते है। ओवी मौखिक साहित्य (वाडमय) के अंतर्गत आती है। अशिक्षित होते हुए भी ओवी को कंठस्थ कर हजारों सालों तक इस सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखा यह बात वंदनीय है। आज सोशल मीडिया के कारण धनगरों की सांस्कृतिक धरोहर को संभालकर रखा जा रहा है।

धनगरी गीतो (ओवी) की व्याप्ति व्यापक है। धनगरी ओवी में सामाजिक धार्मिक, कौंटुबिक, सांस्कृतिक, व्यावसायिक आदि विस्तृत विषयों का समावेश होता है। आधुनिक युग में धनगरी ओवी सर्वसमावेशक हो गई है। ओवी में दिन–ब–दिन और अधिक गहराई, गंभीरता आ गई है।

शिग्रोंबा की ओवी का उदाहरण द्रष्टव्य है –

इठ्ठल– बिरुदेवाच चांगभल
खेलु महादबुवाच चांगभल
सुंबरान मांडिल ग, सुंबरान मांडिल
सुंबरान मांडिल ग, सुंबरान मांडिल
पइल्या सत यौगाला आता
खंडाळ्यच्या घाटाला, खंडाळ्यच्या घाटाला
गोरा मंग सोयब
शिंग्रोबा हे नावाचा । रहात व्हता धनगर
खंडाळ्यच्या घाटाला । शेळ्य मेंड्य राकाइला
अन गोरा मंग सायेब । रस्ता लागल धुंडाइला
अन गोरा मंग सायेब । रस्ता लागल धुंडाइला
खंडाळ्यच्या घाटाला । रस्ता नव्हता घावत
गोरा मंग सायब शिंग्रुबाला बोलतो
रस्ता दाव आमाला । म्होर तवा जायाला
हर हर महादेव ऽऽ हर हर शंकरा

अब आगे ध्यान देकर सुनिये शिंग्रोबा ने अंग्रेज साहब को रास्ता दिखानेपर अंग्रेजोने उसे क्या उपहार दिया... निर्दयी ब्रिटिश सरकारने शिंग्रुबाकी बंदुक की गोली से छलनी कर दी...

गो–या मग सायबान हो। बंदुकिला गोळी या आन गोळी त्याने भरले
शिंग्रुबाला मारल त्यात गोळियाचा आवाज
मेंड्यच्या ये कानाला आन गोळी मग आडकून
शिंग्रुबाच्या भवतन आन् गोळा बगव्हवून वर्डियाला लागल्या
आननारळाच फळ या फळ बगा देवून
आन खंडाळ्यच्या या घाटाला । गाडी डबा या राहिल
नारळाच फळ या ऽऽ फळ बगा देवून
गाडी गेली निगून ऽऽ पुण्याच्या हे जग्याला
हर हर महादेव ऽऽ हर हर ये शंकरा
सुंबरान मांडिल ग ऽऽ सुंबरान मांडिल

धनगरी ओवी में सुंबरान मांडिल शब्द महत्त्वपूर्ण माना जाता है। सुंबरान का अर्थ है स्मरण और मांडिल शब्द का अर्थ है कहना, बताना, रचना करना। अपने देवी देवताओं का स्मरण कर उसे गीतों के माध्यम से प्रस्तुत करने की कला धनगरों में परंपरागत है। अशिक्षित होते हुए भी कथाओं को सहजतासे गीत के रुप में रचना कर इन्हे खास लय में गाते है। ओवी गीतों के दो प्रमुख उद्देश्य है। अपने इष्ट देवता का स्मरण और भक्ति करना और इसी के माध्यम से लोगों का मनोरंजन करना।

इस प्रकार धनगरों की कलाओं में अंग–प्रत्यंग की सहायता से लय, ताल बध्द भंगिमाओं व्दारा मनोभावों एवं हृदय के आवेगों की जीवंत अभिव्यक्ति पायी जाती है। इनका कोई निर्धारित व्याकरण अनुशासन नहीं है। ये उमंग व उल्लास के प्रतीक है। इनमें सहकारिता का भाव भी प्रमुख है सहकारिता की वही भावना लोकजीवन, संस्कृति के उज्ज्वल पक्ष का उद्घाटन करती है।

धनगरों की हजारो सालों की विस्तृत परंपरा को सीमित शब्दों में बांधना महाकठिण कार्य है परंतु फिर भी सेमिनार की आवश्यकता के अनुरुप यह अल्पसा प्रयास बिरोबा चरणी समर्पित....